NCST

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

National Commission For Scheduled Tribes

अस्मिता · अस्तित्व · विकास

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST), भारत के संविधान के अनुच्छेद 338A के तहत स्थापित एक संवैधानिक निकाय है। आयोग का गठन महामहिम राष्ट्रपति महोदय के द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुहर के तहत वारंट द्वारा होता है। आयोग का संगठनात्मक ढांचा:

पद एवं दर्जा:

- अध्यक्ष - कैबिनेट मंत्री
- उपाध्यक्ष - राज्य मंत्री
- सदस्य (3) - भारत सरकार के सचिव

आयोग का नई दिल्ली में एक स्थायी सचिवालय और देश भर में छह क्षेत्रीय कार्यालय हैं। संविधान निर्माताओं ने अनुभव किया कि जनजाति समुदायों की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान एवं विकास की भिन्न चुनौतियां हैं।

जनजाति समुदाय सदियों से आर्थिक विकास के साथ-साथ पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने वाली एक विकास दृष्टि का पालन करता रहा है, जिसे आधुनिक दुनिया में अक्षय विकास कहा जाता है। इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, जनजाति की विशिष्ट आवश्यकताओं को मान्यता दी गई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग को जनजाति समुदायों के अधिकारों की रक्षा एवं विकास की योजनाओं के निरिक्षण का दायित्व एवं विशेष संवैधानिक दर्जा दिया गया है।

आमंत्रण

NCST राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग National Commission For Scheduled Tribes

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

एक दिवसीय संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं छात्रसंवाद

मुख्य अतिथि
श्रीमान् प्रेम सिंह पटेल जी
माननीय मंत्री पशुपालन एवं डेयरी विभाग,
मध्य प्रदेश शासन

अध्यक्ष
प्रो. (डॉ.) सीता प्रसाद तिवारी
माननीय कुलपति
नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान वि.वि.,
जबलपुर

विशिष्ठ अतिथि
डॉ. आर.के. मेहिया
संचालक,
पशुचिकित्सा सेवा, मध्य प्रदेश शासन

डॉ. उमा कुमरे (परते)
मुख्य वक्ता एवं संयोजक

डॉ. श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
विषय विशेषज्ञ एवं सहायक निदेशक

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, भारत सरकार

दिनांक : 12 सितंबर 2022, सोमवार, समयः अपरान्ह 2:00 बजे

स्थल : सभागार,
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर

निमंत्रक

डॉ. श्रीकांत जोशी
कुलसचिव
ना.दे.प.चि.वि.वि.
जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. आर.के. शर्मा
अधिष्ठता
पशु चि.पा.महा.
जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. यामिनी वर्मा
प्रशासनिक संयोजक
ना.दे.प.चि.वि.वि.
जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

छठवा तल, बी–विंग, लोकनायक भवन, खान मार्केट, न्यू दिल्ली - 110 003
संपर्क नंबर: 011-24604689 | टोल फ्री नंबर: 1800-11-7777
वेबसाइट: www.ncst.nic.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

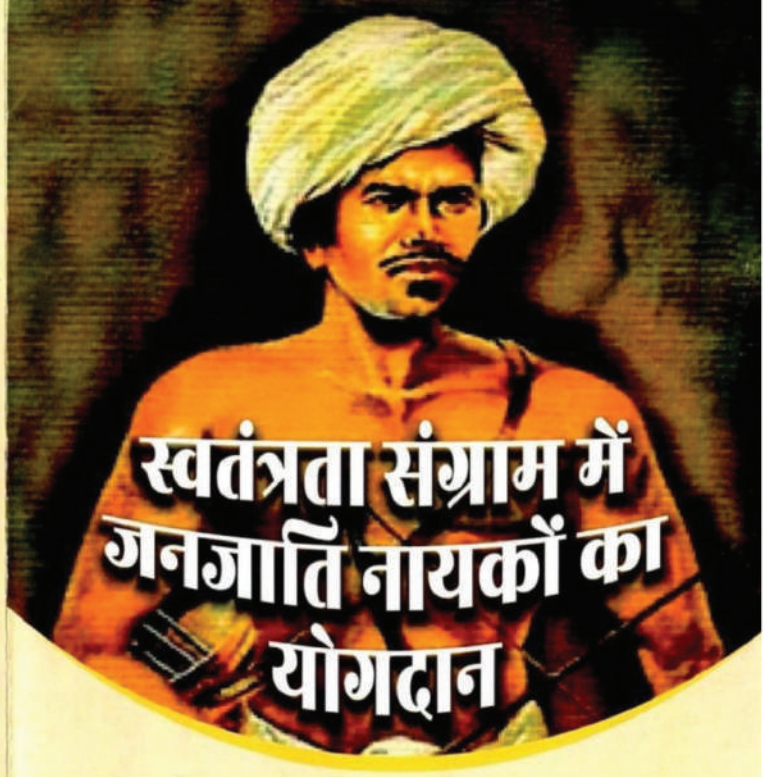

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

NCST

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

National Commission For Scheduled Tribes

अस्मिता · अस्तित्व · विकास

सहयोग

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

Steel Authority of India Ltd. के साथ

जनजाति समाज और स्वतंत्रता संग्राम

भारत का जनजाति समाज अपनी आध्यात्मिक परम्पराओं, विशिष्ट संस्कृति और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथ सदैव से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। जब जब देश की सुरक्षा पर संकट आया जनजाति समाज ने अपने शौर्य और बलिदान से राष्ट्र की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जब अंग्रेज़ी शासन ने भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया तो उन्हें सबसे प्रारम्भिक और सशक्त चुनौती वनवासी अंचलों से ही मिलना प्रारम्भ हुई। जनजाति समाज ने कभी भी अंग्रेजों की दासता को स्वीकार नहीं किया और समय समय पर सशस्त्र विद्रोह और संघर्ष किया।

चाहे तिलका माँझी के नेतृत्व में पहाड़िया आंदोलन हो, कोया जनजाति का विद्रोह हो, कोल जनजाति द्वारा सशस्त्र संघर्ष हो, भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में संघर्ष हो, सिद्धू -कान्हू के नेतृत्व में संथाल आंदोलन हो, भीलों के विभिन्न आंदोलन हो, मानगढ़ का बलिदान हो, रानी गाइदिन्ल्यू के नेतृत्व में नागा आंदोलन हो, अंग्रेजों के विरुद्ध जनजाति समाज के संघर्ष और बलिदान की एक समृद्ध परम्परा रही है।

संगठित आंदोलनों और विद्रोहों के अतिरिक्त जनजाति समाज द्वारा वैयक्तिक बलिदानों की भी एक लम्बी श्रृंखला रही है। हज़ारों नाम तो ऐसे हैं जिनका बलिदान इतिहास के पन्नों में दर्ज ही नहीं हो पाया। आज भी जनजाति समाज में ऐसे अनेक लोकगीत और कथाएँ प्रचलित हैं जो अंग्रेजों के साथ हुए समाज के संघर्ष को रेखांकित करते हैं।

राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत जनजाति समाज द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान को शत् शत् नमन।

प्रिय छात्रों,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम सब इस वर्ष आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह एक स्वर्णिम अवसर है जब हम स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए संघर्षों और बलिदानों को याद करें। उन वीरगाथाओं का पुनर्पाठ करें।

हम सब जानते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति समाज का अविस्मरणीय योगदान रहा है। संगठित विद्रोहों के अलावा भी हज़ारों वैयक्तिक बलिदान हुए हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति समाज के योगदान और जनजाति नायकों के बलिदानों को जनजाति समाज की युवा पीढ़ी के साथ साझा करने के लिए देश भर में 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में **"स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान"** विषय पर कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

आइए अपने विश्वविद्यालय में होने वाले इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। अपने पूर्वजों की वीरगाथाओं को सुनें, उनके बलिदानों को जानें और स्वयं में अपने समाज के प्रति गौरव का भाव जागृत करें।

साथ ही यह एक अवसर भी है जब हम अपने पूर्वजों की परम्परा का निर्वाह करते हुए राष्ट्र की रक्षा, उन्नति और विकास में स्वयं की भूमिका का संकल्प लें।

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

कार्यक्रम विवरण

स्वागत

प्रस्तावना

उद्बोधन - स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

फिल्म - जनजाति क्रांतिकारी

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) प्रस्तुति फिल्म | परिचय | छात्र संवाद

समारोप

प्रदर्शनी उद्घाटन